



## Desh-videsh Ke Jeev-jantuon Ki Lok Kathayen - Vol. 3 देश-वदिश के जीव-जन्तुओं की कथाएं (भाग -3)



**Author:** Santhini Govindan सांथनी गोवनिदन  
**Format:** Paperback  
**ISBN:** 8178060582  
**Code:** 9233D  
**Pages:** 24  
**Price:** Rs. 36.00 US\$ 3.00

**Publisher:** Unicorn Books  
Usually ships within 15 days

पशु-पक्षी मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। तनकि वचिर कीजएि यदहिमें चड्डियों का चहचहाना, पपीहे की पीहू-पीहू और कोयल की कूक सुनने को न मलित्ति, मयूर का नृत्य, वन में वचिरण करते मृग देखने को न मलित्ते, तो हमारा जीवन कतिना नीरस होता। आपको यह जानकर शायद हंसी आए कि इन पशु-पक्षियों को लेकर मनुष्य ने कैसी-कैसी कल्पनाएं कीं। उदाहरण के लिए बाघों के शरीर पर काली धारियां कैसे बनीं? मगरमच्छ की पीठ खुरदरी क्यों होती है? कृत्ता अजनबियों को देखकर भौंकता क्यों है? आदि-आदि। कालान्तर में यही कल्पनाएं लोक-कथाओं का धारण करती गईं। आज विश्व के अनेक देशों जैसे- भारत, वयितनाम, अफ्रीका, अमेरिका, फलिस्तीन आदि में इन पशु-पक्षियों के वषिय में अनेक प्रकार की लोककथाएं प्रचलति हैं। उन्हीं में से कुछ प्रमुख कथाएं चुनकर इस पुस्तक में समाहति की गई हैं।

### About Unicorn Books

Unicorn Books publishes an extensive range of books that are both affordable and high-quality.